मॉड्यूल: परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ और ज़रूरतमंदों के लिए सुसमाचार

1. परिचय: यीशु की सेवकाई का मुख्य केंद्र

यीशु मसीह की संपूर्ण सेवकाई का मुख्य केंद्र उन लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना था जिनसे वे मिले, और जब उन्होंने अपने चेलों को अपने नाम पर सेवा करने के लिए भेजा, तो उन्हें भी यही निर्देश दिया। यीशु ने विशेष रूप से अपना ध्यान उन लोगों पर रखा जो गरीब और ज़रूरतमंद थे, क्योंकि सुसमाचार के अनुसार गरीबी और ज़रूरत केवल धन तक सीमित नहीं है। पाठ्य-सामग्री में 5 प्रकार की गरीबी या ज़रूरतों की पहचान की गई है:

- **आत्मिक रूप से गरीब**
- **स्वास्थ्य के लिहाज़ से गरीब**
- **शक्ति के लिहाज़ से गरीब**
- **सामाजिक दर्जे में गरीब**
- **आर्थिक रूप से गरीब**

यीशु ने गरीबों पर ध्यान क्यों केंद्रित किया?

यीशु ने गरीबों पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि गरीब लोगों की ज़रूरतें होती हैं। उन्हें मदद और समाधान की आवश्यकता होती है, और वे इस बात को भली-भांति महसूस करते हैं कि वे सब कुछ अपने बल पर नहीं कर सकते। इसलिए वे सुसमाचार के संदेश और उसके द्वारा मिलने वाले समाधानों को ग्रहण करने के लिए अधिक खुले होते हैं।

इसके विपरीत, जो लोग जीवन के हर क्षेत्र में धनी हैं, वे अक्सर यह महसूस करते हैं कि उन्हें किसी की मदद की आवश्यकता नहीं है। मत्ती 19:23-24 में यीशु कहते हैं कि एक धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने से आसान ऊँट का सूई के नाके से निकलना है। अमीर लोग अक्सर खुद को इस धोखे में रख लेते हैं कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है, जिसके कारण उनके हृदय सुसमाचार के लिए बंद हो जाते हैं।

2. मुख्य शास्त्रवचन और परमेश्वर के वादे

नीचे दी गई सारणी में उन मुख्य शास्त्रवचनों, उनके संदेशों और नए शिक्षार्थियों के लिए उनके अर्थ को प्रस्तुत किया गया है:

शास्त्रवचन	मुख्य संदेश	शिक्षार्थी के लिए अर्थ
मत्ती 5:3	"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"	जो लोग आत्मा में गरीब या मन के दीन हैं, वे सुसमाचार के संदेश को ग्रहण करने के लिए खुले रहते हैं और स्वर्ग के राज्य के वारिस बनते हैं।
लूका 4:18-19	प्रभु के आत्मा ने यीशु का अभिषेक कंगालों को सुसमाचार सुनाने, बंदियों को छुटकारा, अंधों को दृष्टि, और कुचलों को छुड़ाने के लिए किया है।	परमेश्वर की योजना ज़रूरतमंदों, बंदियों और पीड़ितों को शारीरिक व आत्मिक स्वतंत्रता और चंगाई प्रदान करने की है।
2 पतरस 1:3-4	परमेश्वर की ईश्वरीय सामर्थ्य ने जीवन और भक्ति से संबंधित सब कुछ दिया है और महान प्रतिज्ञाएँ दी हैं ताकि हम ईश्वरीय स्वभाव के समभागी बनें।	परमेश्वर हमें अपने जीवन की हर शारीरिक आवश्यकता और भक्तिपूर्ण जीवन जीने के साधन प्रदान करते हैं तथा संसार की बुराई से छुड़ाकर अपने स्वभाव में सहभागी बनाते हैं।
याकूब 2:5	परमेश्वर ने संसार के कंगालों को चुना है ताकि वे विश्वास में धनी हों और प्रतिज्ञा किए गए राज्य के अधिकारी बनें।	सांसारिक गरीबी के बावजूद, परमेश्वर पर भरोसा रखने वालों की गरीबी की भरपाई परमेश्वर अधिक विश्वास देकर करते हैं और अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाते हैं।
मत्ती 11:5 / लूका 7:22	अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।	यीशु का सुसमाचार केवल बातों तक सीमित नहीं है; यह व्यावहारिक रूप से शारीरिक और आत्मिक ज़रूरतों को पूरा करता है।

3. सुसमाचार का पूर्ण प्रभाव: शरीर, आत्मा और मन

यीशु मसीह का सुसमाचार केवल उद्धार का मार्ग दिखाने तक सीमित नहीं है। सुसमाचार में हमारे जीवन की हर ज़रूरत (शारीरिक और आध्यात्मिक) को पूरा करने और मानव जीवन को पूरी तरह से बदलने—शरीर, आत्मा, और मन—की सामर्थ्य है।

3.1. शरीर के लिए प्रतिज्ञाएँ

परमेश्वर का सुसमाचार हमारी शारीरिक आवश्यकताओं और दुर्बलताओं को संबोधित करता है। लूका 4:18-19 और मत्ती 11:5 (लूका 7:22) के अनुसार, यीशु की सेवकाई ने शरीर की व्यावहारिक ज़रूरतों को पूरा किया:

- बीमारियों और शारीरिक अक्षमताओं से चंगाई (अंधों को दृष्टि, लंगड़ों का चलना, बहरों का सुनना, और कोढ़ियों का शुद्ध होना)।
- शारीरिक मृत्यु और बंधनों से मुक्ति (मुर्दों का जिलाया जाना और बंदियों व कुचले हुए लोगों का छुटकारा)।
- 2 पतरस 1:3 यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर की ईश्वरीय सामर्थ्य ने वह सब कुछ प्रदान किया है जो हमारे "जीवन" (शारीरिक अस्तित्व और व्यावहारिक ज़रूरतों) और "भक्ति" (आत्मिक जीवन) से संबंध रखता है।

3.2. आत्मा के लिए प्रतिज्ञाएँ

आत्मा के स्तर पर, सुसमाचार मनुष्य को अनंत आशीषें और नया स्वभाव प्रदान करता है:

- **आत्मा में दीन लोगों के लिए राज्य:** मत्ती 5:3 के अनुसार, जो लोग आत्मिक रूप से गरीब हैं और अपनी आत्मिक आवश्यकता को स्वीकार करते हैं, स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
- **विश्वास का धन:** याकूब 2:5 दिखाता है कि परमेश्वर ने संसार के कंगालों को चुना है और उनकी सांसारिक गरीबी की भरपाई अधिक विश्वास देकर की है, ताकि वे विश्वास में धनी बनें और उनके राज्य के अधिकारी (वारिस) बनें।
- **ईश्वरीय स्वभाव में सहभागिता:** 2 पतरस 1:4 के अनुसार, परमेश्वर की बहुमूल्य और महान प्रतिज्ञाओं के माध्यम से हम संसार की बुरी अभिलाषाओं और सड़ाहट से छूटकर ईश्वरीय स्वभाव के समभागी बन जाते हैं।

3.3. मन और हृदय के लिए प्रतिज्ञाएँ

मन और हृदय की स्थिति यह तय करती है कि व्यक्ति सुसमाचार को स्वीकार करेगा या नहीं:

- **आत्म-संतुष्टि के धोखे से बचाव:** मत्ती 19:23-24 में बताया गया है कि धनवान लोग अक्सर अपने मन में इस धोखे का शिकार हो जाते हैं कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। सुसमाचार हमारे मन को इस गलतफहमी और कठोरता से बचाता है।

- **नम्रता और खुलापन:** जब कोई व्यक्ति मन का दीन होता है, तो उसका हृदय कठोर नहीं होता। ऐसा मन सुसमाचार के संदेश, उसकी बुद्धि और परमेश्वर द्वारा दिए गए समाधानों को ग्रहण करने के लिए सदैव तैयार और खुला रहता है।

4. प्रमुख निष्कर्ष और शिक्षण बिंदु

1. **ज़रूरत ही अवसर है:** अपनी सीमाओं और ज़रूरतों को स्वीकार करना कमजोरी नहीं है। जब हम यह स्वीकार करते हैं कि हम स्वयं सब कुछ नहीं कर सकते, तब हम परमेश्वर की सहायता और सुसमाचार के समाधानों को पाने के लिए तैयार होते हैं।
2. **संपूर्ण जीवन का परिवर्तन:** सुसमाचार केवल एक विचार नहीं है, बल्कि यह शरीर, आत्मा और मन—इन तीनों क्षेत्रों में हमारी व्यावहारिक और आध्यात्मिक ज़रूरतों को पूरा करने का परमेश्वर का प्रबंध है।
3. **विश्वास में धनी:** दुनिया जिसे लाचार या गरीब समझती है, परमेश्वर अधिक विश्वास प्रदान करके उसकी गरीबी की भरपाई करते हैं और उसे अपने स्वर्गीय राज्य का उत्तराधिकारी बनाते हैं।